67

यह तो कहा ही जाना था

(16:17-27)

हम रोम में मसीही लोगों के नाम पौलुस के पत्र के अन्तिम शब्दों पर आ चुके हैं। नये नियम के पत्रों का समापन आम तौर पर भावी योजनाओं, अन्तिम अभिवादनों, विनतियों और अन्तिम शिक्षा के साथ होता है। जैसा कि हमने देखा है, रोमियों की पत्री के अन्त में, पौलुस ने इन बातों को शामिल किया। उसने भविष्य की योजनाओं की बात की (15:23-29); उसने प्रार्थनाओं के लिए कहा (15:30-33); उसने और विनतियां की (16:1, 2, 16); और उसने व्यक्तिगत सलाम भेजे (16:3-15)। पत्र लगभग समाप्त था परन्तु पूरा नहीं।

16 से 17 आयतों से विषय के एकदम से तबदीली हैरान करने वाली है जैसे पौलुस यह विचार करने के लिए रुका हो कि कहीं कुछ और तो नहीं कहना। शायद वहां पर पत्री लिखने वाले तिरतियुस ने ऊंचे स्वर में पढ़ा कि अब तक क्या लिखा गया है। जो भी परिस्थितियां और ढंग हो, आत्मा की प्रेरणा से पौलुस ने निर्णय लिया कि रोम में रहने वालों के लिए उसे तीन बातें और कहनी *थीं*।[1]

जो तुम्हें दुःख पहुंचा सकते हैं उन से दूर रहो (16:17-20)

चिन्ता की बातें

उसने उन्हें उन लोगों से दूर रहने की सीख दी जो उन्हें आत्मिक रूप से चोट पहुंचा सकते थे: ''अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो;[2] और उन से दूर रहो'' (आयत 17)। 14 और 15 अध्यायों में पौलुस ने अपने पाठकों से साथी मसीहियों को *ग्रहण* करने के लिए उत्साहित किया (देखें 14:1; 15:7)। यहां उसने उन्हें कुछ लोगों *से दूर रहने* को कहा। इन आज्ञाओं में अन्तर क्यों है? क्योंकि अध्याय 14 और 15 में पौलुस *विचार* के मामलों की बात कर रहा था जबकि यहां मुख्य रूप से उसके मन में *विश्वास* के मामले थे।[3]

यीशु और प्रेरितों ने चेलों को आने वाले झूठे शिक्षकों की चेतावनी दी थी (देखें मत्ती 7:15-23; मरकुस 13:22, 23; प्रेरितों 20:29-31; 2 तीमुथियुस 4:3, 4; 1 यूहन्ना 4:1)। झूठे शिक्षक रोम में पहले से आ चुके थे या पौलुस को मालूम था कि वे अन्त में आ जाएंगे, हम नहीं जानते। दोनों स्थितियों में, वह अपने पाठकों को यह समझाना चाहता था कि जब कोई उस शिक्षा के विपरीत जो प्रेरितों ने दी थी सिखाता है तो इसका स्पष्ट परिणाम ''फूट और ठोकर'' होगा।

''फूट'' *dichostasia* (*diche* [''अलग-अलग, दूर''] और *stasis* [''खड़े होना'']) से लिया गया है जिसका अर्थ ''विभाजन'' है[4] (देखें KJV)। गलातियों 5:19, 20 में फूट/विभाजन को शरीर के कामों में लिखा गया है। ''ठोकरें'' *skandalon* से लिया गया है, जिसका अनुवाद

रोमियों 14:13 में ''ठोकर का कारण'' किया गया था।[5] इसका इस्तेमाल किसी भी चीज़ के लिए किया जाता है जो दूसरों के ठोकर खाने या गिरने का कारण बने। 16:1-16 में पौलुस ने प्रेम में एक वातावरण को दिखाया जिसमें मसीही लोग एक दूसरे की सहायता करते थे। परन्तु वह सब खत्म हो जाना था यदि झूठी शिक्षा को सहारकर उसे फैलने दिया जाता। झूठे शिक्षक आज भी संसार में हैं; जब वे अपने कौशल को दिखाते हैं तो परिणाम आज भी फूट और बहुमूल्य आत्माओं का विनाश होता है।

पौलुस के मन में झूठे शिक्षकों की कौन सी बात थी? इसके अनुमान यहूदी धर्म की शिक्षा देने वालों (जिन्होंने मसीही लोगों पर पुराने नियम की व्यवस्था को थोपने की कोशिश की) से लेकर यूनानी दर्शन से प्रभावित थे (जो कहते थे कि मसीही लोग किसी व्यवस्था के अधीन नहीं हैं) तक। शायद पौलुस ने विवरण जान बूझ कर छोड़ दिया ताकि ये आयतें परमेश्वर के वचन की विपरीत सिखाने वाले किसी भी और हर व्यक्ति पर लागू हों।

झूठे शिक्षकों के प्रति हमारी क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए? पौलुस ने मसीही लोगों से दो बातें करने का आग्रह किया। पहली तो उसने कहा कि ''उन्हें ताड़ लिया करो।'' ''ताड़ लिया करो'' का अनुवाद *scopeo* से किया गया है जिसका अर्थ है ''ध्यान रखना, देखना, नज़र रखना, विचार करना।''[6] KJV में ''चिह्नित'' क्रिया है। जहां तक हमें इसके अर्थ की समझ आती है कि इसका अर्थ ''मेरे शब्दों को चिह्नित कर लो'' लोकोक्ति में मिलता है तब तक चिह्नित शब्द में कोई बुराई नहीं है। जब हम कहते हैं, ''मेरे शब्दों को चिह्नित कर लो,'' तो हमारे कहने का अर्थ होता है कि ''मेरी बातों को नज़रअन्दाज न करो; उन पर ध्यान से विचार करो कि मैंने क्या कहा है।'' परन्तु कई लोगों ने चिह्नित के लिए अंग्रेज़ी शब्द mark का अर्थ यह लिया है कि किसी को भी जिसे वह झूठा शिक्षक मानते हों ''नाम देने'' की ज़िम्मेदारी दी है। *Scopeo* में ऐसे कार्य का संकेत या अर्थ नहीं है। उस शब्द के क्या अभिप्राय हैं? निम्न अनुवादों पर विचार करें:

- ''तलाश करें'' (NCV)।
- ''निगरानी रखें'' (CJB; CEV; McCord; SEB; NLT; TEV)।
- ''अपनी नज़र रखो'' (NASB; NEB)।[7]
- ''ध्यान रखो'' (RSV; NKJV)।
- ''उस पर नज़र रखो'' (फिलिप्स/Phillips)।
- ''सावधान रहो'' (JB)।

पौलुस अपने पाठकों को बताना चाहता था कि झूठे शिक्षक संसार में थे और वे रोम में आने वाले थे, यदि पहले ही नहीं आ चुके थे। वह नहीं चाहता था कि रोम के मसीही लोग किसी भी शिक्षा को यूं ही ग्रहण कर लें, बल्कि उसने उन्हें उन शिक्षाओं पर नज़र रखने को कहा जो प्रभु की प्रेरणा पाए दूतों की शिक्षा से अलग थीं।

दूसरा, पौलुस ने झूठे शिक्षकों ''से दूर रहने'' को कहा। यहां यूनानी शब्द *ekklino* से लिया गया है (*ek* [''में से''] *klino* [''झुकना'']), जिसका अर्थ है ''से मुड़ना, एक ओर मुड़ना।''[8] KJV तथा अन्य अनुवादों में ''बचना'' है (देखें NKJV; RSV)। नीचे कुछ और अनुवाद हैं:

- ''उनसे दूर रहो'' (NIV; CJB)।
- ''उनसे दूर रहो'' (CEV; NCV)।
- ''उनसे स्पष्ट मुड़ो'' (फिलिप्पिस/Phillips)।

संगति से औपचारिक निकलना इस आज्ञा में हो सकता है (मत्ती 18:15-17; 1 कुरिन्थियों 5:3-5; 2 थिस्सलुनीकियों 3:14, 15; तीतुस 3:10, 11 से तुलना करें), परन्तु पौलुस का ज़ोर व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर था। झूठी शिक्षा देने वालों को हतोत्साहित करना हर मसीही की ज़िम्मेदारी है। आमतौर पर यह ज़िम्मेदारी उनके साथ बहस करके नहीं निभाई जाती,[9] बल्कि उन ''से मुंह मोड़कर या उनसे दूर रहकर'' बनाई जाती है। उनके साथ संगति न करें (देखें 2 यूहन्ना 10, 11) यानी उनको गलत शिक्षा फैलाने का अवसर न दें।

चेतावनी जारी रखते हुए पौलुस ने झूठे शिक्षकों का पर्दाफाश किया कि वे वास्तव में क्या हैं। पहले उसने कहा, ''क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं'' (आयत 18क)। यह आयत मूल में कहती है कि ये लोग ''अपने ही पेट'' के दास थे (देखें KJV)। पौलुस ने फिलिप्पियों 3 में इसी शब्द का इस्तेमाल किया: ''... जिनकी चर्चा मैंने तुम से बार-बार की है, और अब भी रो रोकर कहता हूं, कहता हूं कि वे अपनी चाल-चलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। उनका अन्त विनाश है, उन का ईश्वर पेट है'' (आयतें 18ख, 19क)। गलत शिक्षा देने वाले इन लोगों को यीशु की महिमा करने या लोगों को सुधारने की कोई चिन्ता नहीं थी, उनका ध्यान अपनी ओर था अर्थात अपनी ही वासनाओं को संतुष्ट करने के लिए, अपने ''पेट'' भरने पर था।

पौलुस ने आगे कहा, ''और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं'' (रोमियों 16:18ख)। ''चिकनी ... बातों'' का अनुवाद *chrestologia*[10] (*chrestos* [''अच्छा''] और *logos* [''वचन'']) से किया गया है। इसका अर्थ ''मीठी सराहनीय बातें'' है।[11] ''चुपड़ी बातें'' का अनुवाद *eulogia* (*eu* [''अच्छा''] के साथ *logos* [''वचन'']) से किया गया है, जिसका इस्तेमाल यहां बुरे अर्थ में हुआ है। झूठे शिक्षकों की पहचान केवल बातें करने और गंवार ढंगों से नहीं हो सकती। आम तौर पर वे आकर्षक व्यक्तित्व वाले और अच्छे मेल-जोल वाले लोग होते हैं। कई तो बड़े अच्छे वक्ता हैं, जो विश्वास दिलाने वाले तर्क देते हैं, यह विश्वास दिलाते हुए कि जिनसे सच्चाई में जड़ न रखने वाले लोग विश्वास कर लेते हैं।

यह झूठे शिक्षक ''सीधे-सादे मन के लोगों को बहका'' देने में सक्षम होते हैं। ''सीधे सादे'' का अनुवाद (*akakos*) से किया गया है जिसका अर्थ ''बिना (*a,* नकारात्मक) दुष्टता (*kakos*) के'' है। इस शब्द का इस्तेमाल ''निर्दोष'' या ''निष्कपट'' होना के लिए किया जाता है।[12] NIV में ''भोला भाला'' है। इसमें नये बने मसीही और वे लोग शामिल हैं जो आत्मिक ज्ञान में बड़े नहीं हैं (देखें इब्रानियों 5:12)। झूठे शिक्षकों की ''चिकनी-चुपड़ी बातें'' करने के लिए ये लोग आसान शिकार हैं। हम में से हर किसी को संदेहवादी सुनने वाले होना आवश्यक है जो हर बात को जिसे हम सुनते हैं परमेश्वर के वचन से मिलाने वाले हों (देखें प्रेरितों 17:11ख)। MSG में है ''मीठी छुरी के सम्बन्ध में भोले न बनें।'' उपहार के रूपक पर विचार करें: चमकदार लिफाफे को देखकर चुंधिया न जाएं बल्कि ध्यान से उसके अन्दर के सामान को देखें।

रोमियों 16:17, 18 की चेतावनी इन शब्दों के साथ आरम्भ हुई: ''अब हे भाइयों मैं तुम से विनती करता हूं'' जैसा कि पहले देखा गया है, ''मैं तुम से विनती करता हूं'' कठोर भाषा है।[13] इसका अर्थ है ''मैं तुम से भीख मांगता हूं; मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं; मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ता हूं।'' पौलुस रोम में मसीह के काम पर पड़ने वाले झूठी शिक्षा के प्रभाव के प्रति बहुत चिंतित था। वह अपने पाठकों को सावधान करना चाहता था और इसे मण्डली के द्वारा फैलने से पहले रोकना चाहता था।

ओक्लाहोमा में पिछला वर्ष बहुत सूखे वाला रहा। कुछ महीनों तक, राज्य भर में आग बेकाबू होती रही। यदि उस आग को आरम्भ में ही रोक लिया जाता तो वह जूते से बुझाई जा सकती थी। परन्तु जंगल में आग के फैल जाने पर इसे बुझाना लगभग असम्भव होता है। हज़ारों एकड़ फसल बर्बाद हो जाती है; घर और गोदाम नष्ट हो जाते हैं; जानवर और लोग मारे जाते हैं। इसी प्रकार से मैंने झूठी शिक्षा को मण्डलियों में से बेकाबू आग की तरह निकलते, आत्मिक अव्यवस्था और आत्मिक मृत्यु को छोड़ते देखा है। पौलुस की चेतावनी को गम्भीरता से लें। इसे बढ़ने *न* दें!

भरोसे के वचन

चेतावनी देने के बाद पौलुस ने एक अर्थ में फुर्ती से जोड़ा कि उसके मन में रोम में मसीही लोग नहीं थे जब उसने आसानी से धोखा खा सकने वालों की बात की। उसने कहा, ''तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई है'' (रोमियों 16:19क)। पत्र के आरम्भ में उसने उन्हें बताया, ''तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है'' (1:8)। ''इसलिए,'' उसने कहा कि ''मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूं'' (16:19ख)।

''परन्तु,'' उसने जोड़ा (उस शब्द ''परन्तु'' को देखें), ''मैं यह चाहता हूं कि तुम भलाई के लिए बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिए भोले[14] बने रहो'' (आयत 19ग)। एक और जगह पौलुस ने अपने पाठकों को समझाया, ''बुराई में तो बालक रहो, परन्तु समझ में सियाने बनो'' (1 कुरिन्थियों 14:20)। यीशु ने ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल किया जब उसने अपने चेलों को भेजा था: ''सांपों की नाईं बुद्धिमान और कबूतरों की नाईं भोले बनो'' (मत्ती 10:16)। पुराने नियम के इस्तेमाल में, ''बुद्धिमान'' में आम तौर पर कौशल और अनुभव दोनों शामिल होते थे।[15] पौलुस की ताड़ना को विभिन्न प्रकार से लिखा जा सकता है:

- ''भलाई में निपुण परन्तु बुराई में भोले बनो।''
- ''भलाई में कुशल और बुराई में अकुशल।''
- ''भलाई में अनुभवी और बुराई में अनुभवहीन बनो।''

पौलुस की ताड़ना से पूर्व ''परन्तु'' शब्द इस बात का संकेत देता है कि विश्वास और आज्ञापालन में भाइयों में अच्छा नाम होने के कारण ही रोम की कलीसिया झूठी शिक्षा की बात पर अभेद्य नहीं थी। यह तथ्य कि इसके सदस्य ज्ञान से परिपूर्ण थे और एक दूसरे को समझा सकते थे (रोमियों 15:14) यह अर्थ नहीं देता था कि वे भटक नहीं सकते। उन्हें आत्मसंतुष्ट नहीं बनना था

बल्कि उन्हें चौकस रहने की आवश्यकता थी।

यदि वे चौकस रहते तो पौलुस ने उन्हें यह आश्वासन दिया: ''शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पांवों से शीघ्र कुचलवा देगा'' (16:20क)। ''कुचलवा'' पूर्ण पराजय का संकेत देता है। यह भाषा हमें उत्पत्ति 3:15 की प्रतिज्ञा का स्मरण कराती है, जो क्रूस की ओर ध्यान दिलाती है। क्रूस पर जाकर यीशु ने शैतान को पराजित किया (इब्रानियों 2:14)। अब हम एक ऐसे शत्रु से लड़ते हैं जो पराजित हो चुका है परन्तु अभी भी खतरनाक है (1 पतरस 5:8)।

कई लोगों का मत है कि रोमियों 16:20 की प्रतिज्ञा संसार के अन्त से जुडी है जिसमें ''शीघ्र'' इस बात का संकेत है कि ''निकट'' (किसी भी समय)। सम्भवतया पौलुस रोम के लोगों को यही आश्वासन दे रहा था कि यदि वे चौकस रहें, तो परमेश्वर उन्हें शैतान और उसके सहायकों पर पूर्ण विजय देगा। (आखिर, उनमें चिकने चुपड़े झूठे शिक्षकों के पीछे कौन था? शैतान।)

पौलुस ने एक संक्षिप्त आशीष वचन के साथ भरोसा दिलाया: ''हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे'' (आयत 20ख)। यदि गलत शिक्षा के बारे में हम पौलुस की ताड़नाओं को मानते हैं तो प्रभु हमें भी विजय देगा और उसका अनुग्रह हमारे साथ होगा।

उन मसीही लोगों को सलाम करें जो आपकी परवाह करते हैं (16:21-24)

पौलुस ने पत्र के निकट आते हुए, दूसरी बात यह की कि उसने कुरिन्थुस के मसीही लोगों की ओर से रोम के मसीही लोगों को सलाम भेजा। उसने अपने पाठकों को बताया कि वे अन्य स्थानों पर भाइयों और बहनों के विचारों तथा प्रार्थनाओं में रहते हैं। कुछ आयतें पहले उसने एक सामान्य सलाम भेजा था (आयत 16ख); यहां उसने विशेष लोगों की ओर से सलाम शामिल किया। 21 से 24 आयतों में से हमें यह प्रभाव मिलता है कि पौलुस गयुस नामक कुरिन्थुस के एक अतिथि सत्कार करने वाले मसीही के घर में पत्र लिखवा रहा था जबकि अन्य उसे बोलते हुए सुन रहे थे। शायद यहां पर उन्होंने पौलुस से कहा कि वे भी अपने सलाम भेजना चाहते हैं।

तीमुथियुस, लूकियुस, यासोन और सोसिपतत्रुस

पहले व्यक्ति को हम जानते हैं: ''तीमुथियुस मेरे सहकर्मी का तुम को नमस्कार'' (आयत 21क)। तीमुथियुस एक जवान आदमी था जिसे पौलुस द्वारा बदला गया था[16] और वह पौलुस का सहयात्री बन गया था। बीते आठ या इससे अधिक वर्षों से तीमुथियुस उसके पास रहा था। बाद में पौलुस ने उसके विषय में लिखा, ''मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, ...''; ''उसको तो तुम ने परखा और जान भी लिया है, कि जैसा पुत्र पिता के साथ करता है, वैसे ही उसने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया'' (फिलिप्पियों 2:20, 22)। इस विश्वासी जवान कर्मचारी ने रोम में अपना सलाम भेजा।

पौलुस ने जोड़ा, ''और लूकियुस और यासोन और सोसिपतरुस मेरे कुटुम्बियों का'' (आयत 21क)। लूकियुस को वैद लूका माना जा सकता है, परन्तु सम्भवतया तीनों जन पौलुस के ''कुटुम्बियों'' के रूप में बताए गए हैं। ''कुटुम्बियों'' शब्द पौलुस के सम्बन्धियों से लिया गया है

या उसके साथ यहूदियों से,[17] यह उन सब को यहूदी बनाता है और जबकि लूका एक अन्यजाति था (देखें कुलुस्सियों 4:10, 11, 14)। इन तीनों नामों के रूपों का उल्लेख प्रेरितों (13:1; 17:5-9; 20:4) में है, परन्तु पक्का पता नहीं है कि ये तीनों लोग जिनके नाम दिए गए हैं उस पुस्तक वाले ही लोग हैं या नहीं।

तिरतियुस

आयत 22 दिलचस्प है: ''मुझ पत्री के लिखने वाले तिरतियुस का प्रभु में तुम को नमस्कार।'' पौलुस आम तौर पर अपने पत्र दूसरों से लिखवाता था, जो वैसे ही लिख देते थे। (ऐसे लिखने वाले के लिए शब्द, लातीनी भाषा का शब्द ''amanuensis'' है।) केवल यहीं पर इन लेखकों ने एक टिप्पणी जोड़ी है। शायद तिरतियुस ने पौलुस से अपना सलाम लिखने को पूछा हो या पौलुस ने उससे कहा हो कि वह चाहे तो अपना व्यक्तिगत सलाम दे सकता है।

गयुस, इरास्तुस, क्वारतुस

तिरतियुस के समाप्त करने के बाद पौलुस ने वहां उपस्थिति लोगों के सलाम भेजने शुरू किए। ''गयुस का जो मेरी और कलीसिया की पहुनाई करने वाला है, उसका तुम्हें नमस्कार'' (आयत 23क)। सम्भवतया यह गायुस वही है जिसे पौलुस ने कुरिन्थुस में बपतिस्मा दिया था (देखें 1 कुरिन्थियों 1:14)। कइयों का तो यह भी मानना है कि प्रेरितों 18:7 वाला तीतुस युस्तुस यही था यानी उसका पूरा नाम गयुस तीतुस युस्तुस था।[18] स्पष्टतया पौलुस कुरिन्थुस की इस फेरी के दौरान गयुस के घर रुका हुआ था। स्पष्ट है कि इस भाई का घर काफ़ी बड़ा था। समय समय पर वह कलीसिया के लोगों को अपने घर में बुलाता और सम्भवतया बाहर से आने वाले मसीही लोगों की खातिरदारी करता था। यह भी सम्भव है कि कुरिन्थुस की कलीसिया उसी के घर में इकट्ठा होती थी (देखें JB; CJB; TEV; NLT)।

फिर पौलुस ने कहा, ''इरास्तुस,[19] जो नगर का भण्डारी है, तुम को नमस्कार'' (रोमियों 16:23क)। ''भण्डारी'' शब्द *oikonomos* (*oikos* [''घर'' के साथ] *nemo* [''प्रबन्ध करना'']) का अनुवाद है।[20] हम पक्का नहीं जानते कि नगर *oikonomos* की स्थिति क्या अधिकतर अनुवादों में ''नगर भण्डारी'' है (NASB; RSV; JB; CJB; NCV; CEV; TEV; देखें NKJV; NEB; McCord)। NIV में ''सरकारी कामों के लिए नगर का निर्देशक'' है जबकि SEB में ''नगर प्रबन्धक'' है। फिलिप्स में ''नगर लिपिक'' है।[21]

जब मैं और मेरी पत्नी पुराने कुरिन्थुस के खण्डहरों को देखने गए, तो हमें लगभग दो फुट बाय सात फुट के चूने के पत्थर की स्लैब दिखाई गई जिसमें सात इंच मोटे अक्षर थे। उस स्लैब के शिलालेख का अनुवाद करें तो इस प्रकार पढ़ा जाएगा: ''अपने एडाइल'' (प्रधान) बनाए जाने के बदले में एस्तुस ने अपने खर्च पर [पटरी] बनवाई। पुराविध जॉन मैकरे ने लिखा है, ''खोदाई में मिले अन्य प्रमाण से यह इरास्तुस रोमियों 16:23 में पौलुस द्वारा वर्णित 'नगर का भण्डारी' ... के बजाय कोई और नहीं है।''[22]

जब पौलुस ने कुरिन्थियों के नाम पत्र लिखा तो उसने लिखा कि उस नगर में ''न बहुत सामर्थी और न बहुत कुलीन'' मसीही बने थे (1 कुरिन्थियों 1:26)। परन्तु ''न *बहुत*'' और ''न

कोई'' में अन्तर है। गयुस और अरास्तुस कुरिन्थुस के दो प्रसिद्ध लोग थे जिनके मनों को छुआ गया था और जिन्होंने सुसमाचार की आज्ञा मानी थी।

पौलुस ने अपनी सूची यह कहते हुए समाप्त की, ''और भाई क्वारतुस का'' (रोमियों 16:23ख)। ''क्वारतुस'' का अर्थ है ''चौथा'' जिससे कुछ लोगों को अश्चर्य होता है कि वह तिरतियुस का छोटा भाई तो नहीं जिसके नाम का अर्थ ''तीसरा'' है। शायद वे दास या पूर्व दास थे; गिनती करना दासों की पहचान का एक सामान्य ढंग था।[23] क्वारतुस के बारे में हमारे पास इसके बारे में कोई और जानकारी नहीं है कि पौलुस ने उसे ''भाई'' (brother) कहा। भाई के अंग्रेज़ी में ''brother'' से पहले ''निश्चित उपपद'' (the) से संकेत मिल सकता है कि वह रोम में लोगों में प्रसिद्ध था। यह भी हो सकता है कि वे उसे न जानते हों और यह कि पौलुस के अभिवादन समाप्त करने के निकट आने पर, वह बोल उठा और कहने लगा, ''मेरा भी।''

पौलुस ने दूसरी बात खत्म कर ली थी जिसे वह करना चाहता था। वह रोम के मसीही लोगों को बताना चाहता था कि कुरिन्थुस में ऐसे भाई हैं जो उनकी परवाह करते हैं। मसीह में अपने साथी भाइयों और बहनों को दिल से सलाम देना हमेशा उपयुक्त भी होता है और आवश्यक भी (देखें आयत 16क)।[24]

परमेश्वर को महिमा दें जो आप को मज़बूत करता है (16:25-27)[25]

यह हो सकता है कि यहां पर पौलुस ने तिरतियुस के हाथ से कलम लेकर बाकी की बातें लिखी हों (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 3:17)। अन्तिम बात जो पौलुस अपने पत्र में करना चाहता था वह परमेश्वर की बढ़ाई थी। उसके द्वारा लिखा गया आशीष वचन उसके सब पत्रों में लम्बा है और इस शानदार पत्री के चरम से मेल खाता है। जिम मैक्गुइगन ने कहा है, ''एक ही वाक्य जिससे मेरा सिर तैरने लगता है। इसमें कितना कुछ भरा हुआ है।''[26]

> अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात यीशु मसीह के विषय के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा। परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यवाणियों की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है, कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएं। उसी अद्वैत बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन (रोमियों 16:25-27)।

परमेश्वर को जो स्थिर करता है

आशीष वचन का आरम्भ होता है, ''अब जो तुम को मेरे सुसमाचार के अनुसार स्थिर कर सकता है'' (आयत 25क)। जो हमें ''स्थिर कर सकता है'' (हमें आत्मिक रूप से मज़बूत और सुरक्षित रख सकता है) वह परमेश्वर है। पौलुस की महिमा की बात अपने बनाने वाले और बचाने वाले के लिए है।

परमेश्वर को जिसने प्रकट किया है

परमेश्वर हमें ''मेरे सुसमाचार के अनुसार'' स्थिर कर सकता है, आयत 25ग में पौलुस ने

कहा, ''मेरे सुसमाचार'' इस बात का संकेत है कि सुसमाचार पौलुस को सौंपा गया था और उसने इसे अपना बना लिया था।[27] अगला वाक्यांश, ''यीशु मसीह के विषय के प्रचार'' (आयत 25ख) पौलुस के सुसमाचार का अर्थ बताता और इसकी सामग्री देता है।

वचन जारी रहता है, ''उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा। परन्तु अब प्रगट'' हुआ है (आयतें 25घ, 26क)। हम आमतौर पर ''भेद'' शब्द का इस्तेमाल ऐसी चीज़ के लिए करते हैं जो अभी भी अज्ञात है, परन्तु पौलुस ने इसे उस चीज़ के लिए इस्तेमाल किया जो कालांतर में अज्ञात थी परन्तु अब प्रकट कर दी गई है।[28] तात्पर्य यह था कि ऐसा कोई ढंग नहीं था, जिससे परमेश्वर की प्रेरणा रहित लोग उस भेद का अपना अर्थ निकाल सकते; परन्तु परमेश्वर ने ही उन्हें उन पर वह अर्थ प्रकट करना था। इस मामले में, ''भेद'' वह अद्‌भुत ढंग है जिससे परमेश्वर ने लोगों को यीशु में विश्वास के द्वारा धर्मी गिनने की अपनी योजना पर काम किया।

इस अद्‌भुत विवरण में, पौलुस ने जोड़ा, ''सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यवाणियों की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है, कि वे विश्वास से आज्ञा मानने वाले हो जाएं'' (आयत 26ख)। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने इस भेद की भविष्यवाणी वैसे ही की थी जैसे परमेश्वर ने उन्हें निर्देश दिया था (''सनातन परमेश्वर की आज्ञा से'')। उन्हें स्वयं पूरी तरह से समझ नहीं थी कि परमेश्वर ने उन पर क्या प्रकट किया है (देखें 1 पतरस 1:10–12), परन्तु पौलुस ने परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के भेद को प्रकट करने के लिए उनके लेखों (''पुस्तकों'') का बार बार इस्तेमाल किया, जैसा कि हम रोमियों की पुस्तक के अपने अध्ययन में देख चुके हैं।[29]

पौलुस ने कहा कि ''भेद ... अब प्रकट होकर ... सब जातियों को बताया गया है'' (आयत 25घ, 26क, ख)। ''जातियों'' (*ethnos* से) के लिए यूनानी शब्द ''अन्यजातियों'' के लिए भी शब्द है। जैसे जैसे पौलुस तथा अन्य परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए सुसमाचार प्रचारकों ने सुसमाचार सुनाया, परमेश्वर के अनुग्रह का ''भेद'' गैर यहूदी संसार पर भी प्रकट हो गया।

उस प्रचार का अन्तिम उद्देश्य क्या था? इसका उद्देश्य इन जातियों/अन्यजातियों को ''विश्वास के आज्ञा मानने वाले'' बनाना था (आयत 26ग)। पत्र की आरम्भिक आयतों में पौलुस ने कहा कि ''सब जातियों के लोग विश्वास करके उस की मानें [*ethnos* से]'' (1:5)। NEB के 16:26 के अनुवाद में कहा गया है कि वह भेद ''सब जातियों को बताने अर्थात उन्हें विश्वास और आज्ञापालन में लाने के लिए'' था। CJB में कहा गया है कि यह ''उनमें भरोसे वाली आज्ञाकारिता को बढ़ावा देने के लिए'' प्रकट किया गया था। फिर हम एक महत्वपूर्ण सच्चाई को देखते हैं कि विश्वास जो उद्धार दिलाता है, वही विश्वास है जो आज्ञा मानता है।

एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर को

आशीष वचन का आरम्भ ''अब जो तुम को मेरे सुसमाचार के अनुसार स्थिर कर सकता है'' (आयत 25क) के साथ हुआ था। अब अन्त में आयत 27 में पौलुस ने फिर अपने शब्द अपने प्रभु के लिए कहे: ''उसी एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन।'' पौलुस ने जो कुछ भी किया वह उसके द्वारा परमेश्वर को महिमा देना चाहता था। ''और इस प्रकार रोमियों के नाम पत्र का लम्बा तर्क महिमा के गीत के साथ समापन को पहुंचता है।''[30]

सारांश

कहा जाता है कि रोमियों की पुस्तक में पौलुस के शब्द उसके बेहतरीन शब्द थे। उसने अपना पत्र इन शब्दों के साथ समाप्त किया:

- *चेतावनी की बात:* झूठी शिक्षा देने वालों पर नज़र रखो और उन्हें झूठ फैलाने का अवसर न दो।
- *प्रोत्साहन की एक बात:* समान विश्वास वालों का दिल से अभिवादन करो; उन्हें दिखाओ की आप उनकी परवाह करते हैं।
- *प्रशंसा की एक बात:* यह कभी न भूलें कि जीवन का उद्देश्य परमेश्वर को महिमा देना है। शब्दों के साथ-साथ जीवन शैली के साथ।

रोमियों के नाम पौलुस के पत्र का अध्ययन समाप्त करते हुए मुझे आशा है कि आप इस बात को समझ गए हैं कि आत्मा के द्वारा पौलुस *आपको* भी लिख रहा था। नहीं पौलुस आपको व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था, परन्तु वह रोम के अधिकतर मसीही लोगों को भी नहीं जानता था।[31] आप पहली सदी में नहीं रहते हैं परन्तु आप ऐसे समय और युग में रहते हैं जिसमें अध्याय 1 और 2 में बताई गई बुराइयां ही पाई जाती हैं। पौलुस के समय का यहूदी/अन्यजाति का विवाद आज हमारे साथ नहीं है, परन्तु आज भी हम हर प्रकार की फूट और दलबंदी से घिरे पड़े हैं। सबसे बढ़कर भला जीवन जीने के आधार पर उद्धार की युगों पुरानी गलत शिक्षा आज भी दी जा रही है। पौलुस का पत्र चाहे उन्नीस सौ से अधिक वर्ष पुराना हो परन्तु इसमें आज भी वैसी ही ताज़गी और उपयुक्तता है जैसी इसके लिखे जाने के समय थी।

रोमियों की पुस्तक में पौलुस का अन्तिम शब्द ''आमीन'' है। ''आमीन'' का अर्थ ''उम्मीद है ऐसा ही होगा'' या ''काश ऐसा होता'' नहीं है। यह गहरे विश्वास को दिखाता है कि ''ऐसा ही *है*।''[32] क्या आप अपने अध्ययन का समापन गम्भीर ''आमीन'' के साथ कर सकते हैं? क्या आप अपने पूरे दिल से इस पत्र के संदेश में *विश्वास रखते* हैं? क्या इस अध्ययन से आपको ''*विश्वास का* आज्ञापालन'' करने में अगुआई मिली है? क्या आपने यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार किया है (रोमियों 10:9, 10) और फिर मसीह में बपतिस्मा (डुबकी) लिया है (6:3-6)? क्या आप अब जीवन के नयेपन में (रोमियों 6:4), शरीर के बजाय आत्मा के अनुसार (8:4) चलते हैं? यदि नहीं तो अपनी टिप्पणियों के अन्त में मैं आपको पूरे तन मन से वही करने को प्रोत्साहित करता हूं जो परमेश्वर के अद्भुत प्रेम और अनुग्रह को पाने के लिए इसके बाद करने की आवश्यकता है। मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि ''स्वर्ग का पहला फल वहां जाने के लिए चुकाई गई *किसी भी* कीमत से मूल्यवान होगा!''[33]

टिप्पणियां

[1] *रोमियों, 1* पुस्तक में ''यात्रा की तैयारी करना'' पाठ में रोमियों की अन्तिम आयतों की तुलना पत्र के आरम्भ से की गई थी। आप उस तुलना की समीक्षा कर सकते हैं। [2] पौलुस ''यह मान लेता है, कलीसिया के इतिहास में

आरम्भ में भी शिक्षा तथा नैतिकता सम्बन्धी मानक है जिसे रोमियों द्वारा मानना आवश्यक है, उसमें विरोध नहीं है; यह नये नियम में हमारे लिए रखा गया है'' (जॉन. आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड 'स गुड न्यूज़ ़फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ [डाउनर्स ग्रोव इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994], 399-400), [3]उन मसीही लोगों के लिए प्रासंगिकता बनाई जा सकती है जो विचार की बातों को विश्वास की बातों में बना देते हैं और इस प्रकार रोमियों 14; 15 में पौलुस की शिक्षा को तोड़ते हुए देह में फूट डालते हैं। परन्तु रोमियों 16:17-20 में सिखाने वालों का विवरण सिखाने वालों की झूठी शिक्षा देने वालों से मेल खाता है। [4]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन 'स कम्पलीट एक्सपोज़िस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 179. [5]''इस पुस्तक में पहले आए पाठ, 'मसीह किसके लिए मरा' (14:13ख-18)'' में *skandalon* पर टिप्पणियां देखें। [6]वाइन, 394. [7]बार्कले ने यह अनुवाद भी दिया है (विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ [फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975], 217.) [8]वाइन, 47. [9]कई अवसरों पर झूठी शिक्षा देने वालों का सामना करने की आवश्यकता होती है, परन्तु पौलुस ने मसीही लोगों को झूठी शिक्षा देने वालों को अपनी गलत शिक्षा फैलाने का अवसर देने से बचने के लिए कहा। [10]*दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: समुएल बैगस्टर एंड सन्स, 1971), 438-39.

[11]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* द्वितीय संस्क., संशो. विलियम एफ़. अर्ंडट एंड विल्बर गिंगरिच (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 894. [12]ज्योफ़्री डब्ल्यू ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल एंड गरहर्ड फ्रैडरिच, अनु. ज्योफ़्री. डब्ल्यू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 393 में डब्ल्यू. ग्रैंडमैन, *''kakós ''*। [13]*रोमियों, 4* पुस्तक में ''बदला हुआ जीवन (12:1, 2)'' पाठ में 12:1 में इस्तेमाल किए गए शब्द ''विनती'' पर टिप्पणियां देखें। [14]''भोले'' शब्द *akeraios* से लिया गया है इस शब्द का अर्थ है ''अमिश्रित'' या ''शुद्ध'' *a* [नकारात्मक] के साथ *kerannumi* [''मिलाना''] से नये नियम के इसका अर्थ बेहोश होने के अर्थ में रूपक के रूप में किया गया है (वाइन, 291)। [15]कोय रोपर, लेखक के साथ निजी बातचीत, 16 मार्च 2006. [16]पौलुस ने तीमुथियुस को ''प्रभु में मेरा पुत्र'' (1 कुरिन्थियों 4:17) कहा जो इस बात का संकेत है कि उसने उसे बदला था। प्रेरितों 16:1, 2 से हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि तीमुथियुस लुस्त्रा का रहने वाला था। तीमुथियुस का मन परिवर्तन सम्भवतया लुस्त्रा में उस समय हुआ जब पौलुस और बरनबास पहली मिशनरी यात्रा में वहां गए हुए थे। (प्रेरितों 14:6-23 पहली यात्रा के दौरान लुस्त्रा में उनके रुकने की बात बताता है।) [17]इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''पौलुस और उसके मित्र (16:1-16, 21-23)'' ''कुटुम्बी/कुटुम्बियों'' पर चर्चा देखें। [18]कइयों की तरह रोमी लोगों के तीन नाम होते थे। रोमी लोग इन्हें *praenomen* [पहला नाम], *nomen gentile* [पारिवारिक नाम] और *cognomen* [उप नाम या व्यक्तिगत नाम कहते थे]। (एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू दि रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985], 265.) [19]जहां मैं बड़ा हुआ हूं वहां हम इस नाम को दूसरे अक्षर ''ई-रा-स-तुस'' पर ज़ोर देकर बोलते थे। मेरे आरकैंसा में रहने के समय, यूनान का एक जवान कॉलेज का छात्र था, जिसका नाम एरास्तुस था, और वह जुडसोनिया की मण्डली के साथ आराधना करता था। जब उसकी मां उससे मिलने के लिए आई, तो उसने हमें बताया कि यूनान में उसका नाम ''इर-उह-स्तुस'' बुलाया जाता था। [20]*दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: समुएल बैगस्टर एंड सन्स, 1971), 284.

[21]KJV में एक पुराना अंग्रेज़ी शब्द ''chamberlain'' है। चैम्बरलिन ''राजाओं तथा शाही लोगों के घरों में अलग-अलग ड्यूटियों को निभाने वाला अधिकारी'' होता था (वाइन, 95)। [22]जॉन मैकरे *आर्कियोलॉजी एंड द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स हाउस, 1991), 331-33. [23]अमेरिका में माता-पिता के बारे में जाना जाता है कि वे अपने बच्चों के नाम वही रखते हैं जो वास्तव में लातीनी अंक होते हैं। कलीसिया की बहाली के अगुआ एलेक्जेंडर कैम्पबेल की दसवीं बेटी का नाम Decima था। [24]अभिवादनों की सूची के बाद, कुछ हस्तलेखों में आशीष वचन है जो मुख्यतया आयत 20 का दोहराया जाना ही है, जबकि अन्य हस्तलेखों में यह आशीष वचन नहीं है। NASB में आशीष वचन (आयत 24) को कोष्ठकों में रखा गया है। [25]अलग-अलग प्राचीन हस्तलेखों में अलग-अलग स्थानों में होने के कारण रोमियों के इस प्रकार अन्त पर कुछ प्रश्न है। एक विश्वासी के लिए यह जानना ही काफ़ी नहीं है कि परमेश्वर ने इस स्थिति में हमारे लिए उपाय करके इसे सम्भालकर रखा है। इससे इस महान

दस्तावेज़ के लिए कितना अद्‌भुत समापन मिलता है।[26]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इनटू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोंटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 446. [27]पौलुस ने पहले इस वाक्यांश का इस्तेमाल 2:16 में किया था। *रोमियों, 1* पुस्तक में आए पाठ ''क्या आप न्याय के लिए तैयार हैं' (2:1-16)'' में देखें। [28]*रोमियों 4,* पुस्तक में आए पाठ ''सारा इस्राएल उद्धार पाएगा' (11:25, 26क)'' में ''भेद'' शब्द पर चर्चा देखें। [29]कइयों का मानना है कि ''भवष्यिवक्ताओं'' का इस्तेमाल नये नियम के भविष्यवक्ताओं (प्रेरणा पाए हुए परमेश्वर के लिए बोलने वाले लोग) के लिए किया गया है। पौलुस ने रोमियों के नाम अपने पत्र में पुराने नियम के हवाले बार-बार दिए सो ''भविष्यवक्ता'' को पुराने नियम के नबियों के हवाले के रूप में लेना अधिक सही लगता है। [30]बार्कले, 222.

[31]इस पद्य के कई विचार ब्रूस बार्टन, डेविड विर्मन, नील विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 296 से लिए गए हैं। [32]चार्ल्स आर. स्विन्डल, *रिलेटिंग टू अदर्स इन लव: ए स्टडी ऑफ़ रोमन्स 12-16* (अनहीम, कैलीफोर्निया: इनसाइट फ़ॉर लिविंग, 1985), 78. [33]ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 26 फरवरी 2006 को दिया गया डेल हार्टमैन का प्रवचन।